Phoenix: International Multidisciplinary Research Journal
Vol 4, No. 1.1, March 2026
ISSN: 2583-6897

महिला सशक्तिकरण, नेतृत्व एवं सतत विकास।

डॉ. हिमालया सुनिल सकट
सहा. प्रा. हिंदी विभाग प्रमुख

मामासाहेब मोहोळ महाविद्यालय
पौड रोड पुणे , 38.

Email : Himalaya.jajot22@gmail.com

सारांश :

महिला सशक्तिकरण आधुनिक समाज के विकास का एक महत्वपूर्ण आधार है। किसी भी राष्ट्र की प्रगति तभी संभव है, जब महिलाएं सामाजिक आर्थिक और राजनीतिक स्रोतों में सक्रिय भूमिका निभाए। नेतृत्व में महिलाओं की भागीदारी से न केवल लैंगिक समानता को बढ़ावा मिलता है, की निरंतर विकास के लक्ष्य को पुनः प्राप्त करने में भी सहायता मिलती है। इस शोध पत्र का उद्देश्य महिला सशक्तिकरण नेतृत्व और सतत विकास के बीच संबंध का अध्ययन करना है। इसमें यह विश्लेषण किया गया है कि महिलाओं को अवसर प्रदान करने से समाज में सकारात्मक परिवर्तन कैसे आते हैं तथा विकास की प्रक्रिया अधिक समावेशी और स्थाई बनती है।

मुख्य शब्द

महिला सशक्तिकरण ,नेतृत्व ,लैंगिक समानता, सतत विकास ,सामाजिक विकास।

प्रस्तावना

वर्तमान समय में महिला सशक्तिकरण वैश्विक विकास का एक मुख्य मुद्दा है। इतिहास में बने लंबे समय तक महिलाओं को शिक्षा ,रोजगार और नेतृत्व के अवसरों से वंचित रखा गया। किंतु आधुनिक समाज में महिलाओं की भूमिका लगातार बढ़ रही है। सतत विकास की अवधारणा यह बताती है कि विकास ऐसा होना चाहिए जो वर्तमान आवश्यकताओं को पूरा करते हुए भविष्य की पीढीया की आवश्यकताओं से समझौता न करें। इसमें महिलाओं की भागीदारी अत्यंत आवश्यक है क्योंकि वह समाज के आधे हिस्से का प्रतिनिधित्व करती है।

महिला नेतृत्व समाज में समानता न्याय और सामाजिक संतुलन स्थापित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। जब महिलाएं निर्णय लेने की प्रक्रिया में शामिल होती है तो विकास नीतियों, अधिक सक्षम और समावेशी बनती है।

महिला सशक्तिकरण की अवधारणा।

महिला सशक्तिकरण का अर्थ है महिलाओं को सामाजिक आर्थिक राजनीतिक और शैक्षिक रूप से सक्षम बनाना ताकि वह निर्णय ले सके।

महिला सशक्तिकरण के प्रमुख आयाम इस प्रकार।

1) शैक्षिक सशक्तिकरण : महिलाओं को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करना

2) आर्थिक सशक्तिकरण, रोजगार उद्यमिता और वित्तीय स्वतंत्रता

3) सामाजिक सशक्तिकरण समाज में सम्मान और अवसर प्रदान करना,

4) राजनीतिक सशक्तीकरण, शासन और निर्णय प्रक्रिया में भागीदारी देना, राजनीतिक शिक्षा और आर्थिक स्वतंत्रता । स्वतंत्रता महिला सशक्तिकरण के सबसे महत्वपूर्ण आधांर माने गए हैं।

आर्थिक सशक्तिकरण :

का अर्थ है महिलाओं को आर्थिक संसाधन ,रोजगार, आय और संपत्ति पर नियंत्रण प्राप्त करना होता है । उसके अंतर्गत आर्थिक सशक्तिकरण में रोजगार के अवसर, वेतन, वित्तीय व्यवहार, वित्तीय स्वतंत्रता, उद्यमिता ,संपत्ति और भूमि पर अधिकार शामिल होता है । आर्थिक सशक्तिकरण से महिलाओं की आत्मनिर्भरता बढ़ती है । परिवार की आर्थिक स्थिति मजबूत होती है ।गरीबी में कमी आती है । समाज में महिलाओं का सम्मान बढ़ता है । आर्थिक सशक्तिकरण में उच्च शिक्षा की भूमिका यह होती है कि महिलाओं को रोजगार के बेहतर अवसर प्राप्त होते हो । उनमें व्यावसायिक कौशल विकसित होता है । आर्थिक निर्णय लेने की क्षमता में बढ़ोतरी देखी गई है।

सामाजिक सशक्तिकरण :

सामाजिक सशक्तिकरण का अर्थ है, महिलाओं को समाज में समान स्तरीय सम्मान और स्वतंत्रता प्राप्त होना है । इसमें मुख्यतः लैंगिक समानता, सामाजिक न्याय, स्वास्थ्य

और सुरक्षा, विवाह और परिवार से जुड़े निर्णय में स्वतंत्रता इत्यादि मुख्य तत्व जुड़े होते हैं। सामाजिक सशक्तिकरण का प्रभाव इस तरह होता है कि लैंगिक भेदभाव में कमी आती है ,बाल विवाह के प्रमाण में कमी आती है, महिलाओं के स्वास्थ्य और शिक्षा में सुधार होता है , समाज में समानता की स्थापना की जाती है।

राजनीतिक सशक्तिकरण :

इसका अर्थ है महिलाओं को राजनीतिक प्रक्रिया और निर्णय निर्माण में सक्रिय भागीदारी मिलती है । इसमें महिलाओं को मतदान का अधिकार, चुनाव लड़ने का अधिकार, नीति निर्माण में भागीदारी ,राजनीतिक प्रतिनिधित्व इत्यादि प्रमुख तत्व होते हैं। इसके अंतर्गत महिलाओं के हित का संरक्षण किया जाता है । सामाजिक न्याय को बढ़ावा मिलता है। लोकतंत्र मजबूत बनता है। और उन्हें पंचायती राज में आरक्षण प्राप्त होता है । तथा महिला नेतृत्व को बढ़ावा मिलता है।

शैक्षिक सशक्तिकरण :

का अर्थ है महिलाओं को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा ,ज्ञान प्राप्त करने के अवसर प्रदान करना, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा महिलाओं में ज्ञान और कौशल प्रदान करती है। सामाजिक जागरूकता बढ़ती है । आर्थिक अवसरों को बढ़ाती है । निर्णय लेने की क्षमता विकसित करती है। नेतृत्व क्षमता विकसित होती है। शोध और नवाचार का प्रमाण बढ़ता है। वैश्विक दृष्टिकोण में बढ़ोतरी होती है । शिक्षा प्राप्त महिलाएं स्वास्थ्य पोषण और पर्यावरण के प्रति अधिक जागरूक हो जाती है। महिला सशक्तिकरण समाज में समग्र विकास के लिए अत्यंत आवश्यक है । आर्थिक, सामाजिक ,राजनीतिक और शैक्षिक सशक्तिकरण के माध्यम से महिलाएं अपने अधिकारों को प्राप्त कर सकती है । और समाज के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दे सकती है । उच्च शिक्षा इस प्रक्रिया में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है क्योंकि यह महिलाओं को ज्ञान कौशल और आत्मविश्वास प्रदान करती है । सतत विकास के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए महिलाओं को शिक्षा, रोजगार और निर्णायक का निर्माण के सभी क्षेत्रों में समान अवसर प्रदान करना आवश्यक है ।

नेतृत्व में महिलाओं की भूमिका

नेतृत्व किसी समूह या समाज को दिशा देने की क्षमता रखता है । जब महिलाएं नेतृत्व के किसी समूह है या समाज को दिशा दे, तब महिलाएं नेतृत्व के पदों पर आती है तो वह नई दृष्टि, संवेदनशीलता और संतुलित निर्णय लेकर आती है।

महिला नेतृत्व की विशेषताएं।

1) बेहतर सामाजिक नीतियों का निर्माण

2) शिक्षा और स्वास्थ्य क्षेत्र में सुधार

3) लैंगिक समानता को बढ़ावा

4) समुदाय आधारित विकास को प्रोत्साहन

जिन संगठनों में महिला नेतृत्व अधिक विकसित होता है। वहां पारदर्शिता और सामाजिक उत्तरदायित्व अधिक मजबूत होता है । महिला सशक्तिकरण और सतत विकास का अर्थ है । ऐसा विकास जो वर्तमान की आवश्यकताओं को पूरा करें और भविष्य की पीढीया के लिए संसाधन सुरक्षित करें।

सतत विकास कई पहलू

1) गरीबी उन्मूलन,

2) गुणवत्तापूर्ण शिक्षा

3) स्वास्थ्य और पोषण

4) पर्यावरण संरक्षण

5) सामाजिक न्याय

जब महिलाएं आर्थिक रूप से सक्षम होती है तो वह परिवार और समाज में शिक्षा, स्वास्थ्य और पर्यावरण के प्रति अधिक जागरूकता लगती है।

भारत में महिला सशक्तिकरण की स्थिति

भारत में महिला सशक्तिकरण के लिए कई सरकारी योजनाएं और नीतियां लागू की गई है । जैसे बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ स्वयं सहायता समूह, महिला आरक्षण , कौशल

विकास कार्यक्रम इन योजनाओं के माध्यम से महिलाओं की शिक्षा रोजगार और सामाजिक भागीदारी में वृद्धि हुई है। फिर भी ग्रामीण क्षेत्रों में लैंगिक असमानता, शिक्षा की कमी और सामाजिक बाध्याये । अभी भी चुनौती बनी हुई है।

चुनौतियां

1) लैंगिक भेदभाव

2) शिक्षा की कमी

3) आर्थिक निर्भरता

4) सामाजिक रूढ़ियों

5) निर्णय लेने में सीमित भागीदारी

इन समस्याओं। कई महिलाएं अपनी क्षमता का पूर्ण उपयोग नहीं कर सकती ।

समाधान और सुझाव

महिला सशक्तिकरण को मजबूत बनाने के लिए निम्नलिखित उपाय :

1) महिलाओं की शिक्षा को प्राथमिकता दें।

2) रोजगार और उद्यमिता के अवसर बढ़ाना ।

3) नेतृत्व प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करना ।

4) लैंगिक समानता के प्रति सामाजिक जागरूकता बढ़ाना।

5) नीति निर्माण में महिलाओं की भागीदारी सुनिश्चित करना।

निष्कर्ष

महिला सशक्तिकरण नेतृत्व और सतत विकास एक दूसरे के गहराई से जुड़े हुए हैं । यदि महिलाओं को समान अवसर शिक्षा और नेतृत्व की भूमिका प्रदान की जाए तो समाज अधिक अधिक न्याय पूर्ण और टिकाऊ विकास की दिशा में आगे बढ़ेगा । सतत विकास के लक्षण को प्राप्त करने के लिए महिलाओं की सक्रिय भागीदारी अनिवार्य है । इसलिए सरकार

समाज और संस्थाओं को मिलकर महिलाओं के सशक्तिकरण के लिए निरंतर प्रयास करते रहना चाहिए।

संदर्भ ग्रंथ सूची।

1) संयुक्त राष्ट्र 2015 सतत विकास लक्ष्य रिपोर्ट सस्टेनेबल डेवलपमेंट गोल्स रिपोर्ट न्यू यॉर्क, संयुक्त राष्ट्र 2020।

2) भारत सरकार महिला सशक्तिकरण एवं बाल विकास मंत्रालय की रिपोर्ट 2022, नई दिल्ली, भारत सरकार।

3) रामेश्वर शर्मा 2018, भारत में महिला सशक्तिकरण वूमेन एंपावरमेंट इन इंडिया नई दिल्ली राज प्रकाशन।

4) दुबे सुनीता 2017 महिला नेतृत्व और समाज विकास वूमेन लीडरशिप एंड सोशल डेवलपमेंट जर्नल ऑफ़ सोशल साइंसेज खंड, 12 अंक 4।

5) प्रिया नायडू 2019 ग्रामीण महिलाओं का आर्थिक सशक्तिकरण इकोनामिक पावर एंपावरमेंट वूमेन इन इंडिया दिल्ली सामाजिक विज्ञान प्रकाशन।

6) भारत सरकार बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ रिपोर्ट 2021, नई दिल्ली महिला एवं बाल विकास मंत्रालय।

7) संयुक्त राष्ट्र महिला एजेंसी, यूनाइटेड वूमेन 2018 महिला सशक्तिकरण और वैश्विक सतत विकास ।